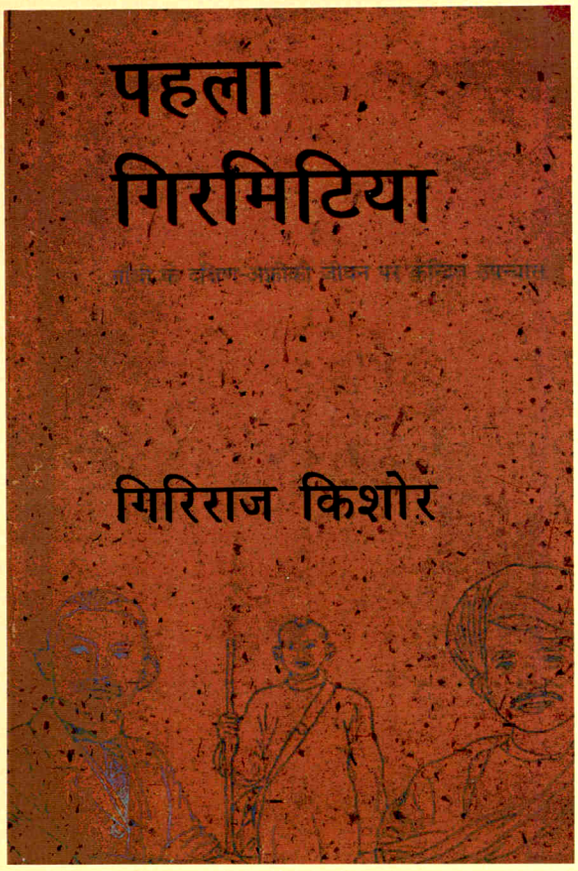

हिंदी उपन्यासकार गिरिराज किशोर

मराठी उपन्यासकार विश्वास पाटील

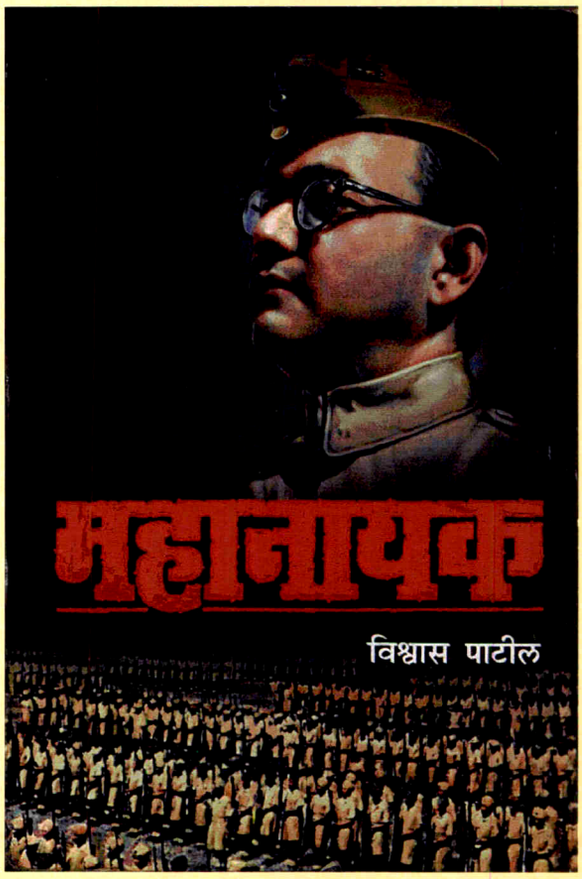

प्राक्कथन

प्राक्कथन

❑ प्रेरणा एवं विषय चयन -

हिंदी साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यास विधा के प्रति मेरी रूचि शुरू से ही रही है। अध्ययन के सिलसिले में मैंने उपेंद्रनाथ अश्क का 'पत्थर अल पत्थर', प्रेमचंद का 'गोदान', 'कर्मभूमि', इसके अलावा जैनेंद्र का 'त्यागपत्र', यशपाल का 'झूठा सच', भगवतीचरण वर्मा का 'चित्रलेखा', अज्ञेय का 'शेखर एक जीवनी' आदि उपन्यास पढ़े। एम्.फिल. के अध्ययन के दौरान विनोदकुमार शुक्ल का 'नौकर की कमीज', राजेंद्र यादव का 'शह और मात', अज्ञेय का 'अपने-अपने अजनबी', अलका सरावगी का 'कलि-कथा : वाया बाइपास' आदि उपन्यासों को पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। हिंदी की तरह मराठी उपन्यासों की ओर रूचि पहले से ही रही है। अण्णाभाऊ साठे का 'फकिरा', शिवाजी सावंत का 'मृत्युंजय', वि.स. खांडेकर का 'ययाति', विश्वास पाटील का 'झाडाझडती', 'चंद्रमुखी', सदानंद देशमुख का 'तहान' आदि उपन्यास पढ़े।

मैंने एम्.फिल. के दौरान डॉ. अर्जुन चव्हाण जी, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के यु.जी.सी. के मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट (''समकालीन हिंदी तथा मराठी के बृहत् उपन्यासों का वैचारिक पक्ष : तुलनात्मक विमर्श '') में परियोजना सहायक के रूप में कार्यरत था तब मैंने आपसे एम्.फिल. के विषय चयन की दृष्टि से विचार-विमर्श किया। आपने प्रोजेक्ट के अंतर्गत आनेवाले हिंदी तथा मराठी के सशक्त रचनाकारों को पढ़ने के लिए सुझाया। इसी सिलसिले में मैंने गिरिराज किशोर को 'पहला गिरमिटिया' तथा विश्वास पाटील के 'महानायक' पढ़ा। उन दो उपन्यासों को पढ़कर मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ।

गिरिराज किशोर 'पहला गिरमिटिया' तथा विश्वास पाटील का 'महानायक' उपन्यास पढ़ने के पश्चात् मैंने श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी से विचार-विमर्श किया और आपके सुझावों के अनुसार लघु शोध-प्रबंध के लिए '' 'पहला गिरमिटिया' तथा 'महानायक' का विचार पक्ष : तुलनात्मक अध्ययन'' विषय का चयन किया।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे सामने कुछ प्रश्न उजागर हुए थे -

1. गिरिराज किशोर तथा विश्वास पाटील के व्यक्तित्व एवं कृतित्व विशेषताएँ क्या है ?
2. 'पहला गिरमिटिया' तथा 'महानायक' उपन्यास का मूल विषय क्या है ?
3. तुलनात्मक अध्ययन क्यों और कैसे किया जाता है ?
4. विवेच्य उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन किस प्रकार होगा ?
5. विवेच्य उपन्यासों का विचार पक्ष किस प्रकार होगा ?
6. विवेच्य उपन्यासों की औपन्यासिक कला किस प्रकार होगी ?

विवेच्य उपन्यासों के अध्ययन के पश्चात् मुझे उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुए उन्हें उपसंहार में दिया है। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु-शोध-प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित करके प्रस्तुत शोध के विषय का विवेचन विश्लेषण किया है।

प्रथम अध्याय का शीर्षक है - ''गिरिराज किशोर तथा विश्वास पाटील के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का तुलनात्मक अध्ययन'' :-

इस अध्याय के अंतर्गत गिरिराज किशारे और विश्वास पाटील के जीवन का विस्तृत परिचय दिया है। साथ ही दोनों के व्यक्तित्व के विशेष गुणों पर प्रकाश डाला है। दोनों के बहुआयामी रचना संसार की संक्षेप में परिचय दिया है, अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं। साथ ही उनमें स्थित साम्य-वैषम्य को भी तुलनात्मक रूप से स्पष्ट किया है।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक हैं - ''पहला गिरमिटिया तथा महानायक का विषयगत विवेचन'' :-

इस अध्याय में - गिरिराज किशोर का 'पहला गिरमिटिया' तथा विश्वास पाटील का 'महानायक' इन दो उपन्यासों का विषयगत विवेचन प्रस्तुत किया है। तत्पश्चात अध्याय के अंत में समन्वित मूल्यांकन प्रस्तुत कर विवेच्य उपन्याकारों के उपन्यासों के साम्य भेद प्रस्तुत किए हैं।

तृतीय अध्याय का शीर्षक हैं - ''तुलनात्मक अध्ययन और विवेच्य उपन्यासों के तुलनात्मक अध्ययन का स्वरुप'' :-

इस अध्याय में तुलनात्मक अध्ययन का अर्थ, परिभाषा, उपयोगिता, महत्त्व, उद्देश्य, तुलनात्मक अध्ययन का स्वरूप, तुलनात्मक अध्ययन की विविध प्रणालियों पर प्रकाश डाला है। साथ ही विवेच्य उपन्यासों के तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता, महत्त्व, उद्देश्य, स्वरूप और पद्धतियों को स्पष्ट किया गया है। समग्र विवेचन के उपरांत अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है - ''विवेच्य उपन्यासों का विचार पक्ष : तुलनात्मक अध्ययन'' :-

इस अध्याय में उपन्यासकारों के वैचारिक पक्ष को प्रस्तुत किया है। इसके अंतर्गत राष्ट्र विषयक विचार, श्रम विषयक विचार, विद्रोह विषयक विचार, परिवर्तन विषयक विचार, जनजागृति विषयक विचार, अर्थ विषयक विचार, उपदेश विषयक विचार, इतिहास विषयक विचार आदि विचारों को प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

पंचम अध्याय का शीर्षक है - ''औपन्यासिक कला की दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन'' :-

इस अध्याय के अंतर्गत विवेच्य उपन्यासों की कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, संवाद, देश-काल-वातावरण, भाषा-शैली, उद्देश्य का विस्तृत विवेचन किया गया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष देकर उनमें स्थित साम्य-वैषम्य को तुलनात्मक रूप से स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

अत: अंत में 'उपसंहार' के रूप में इस लघु शोध-प्रबंध का सार रूप दिया है। इसमें पूर्ण विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष को दिया गया है। इसके उपरांत परिशिष्ट एवं संदर्भ ग्रंथ-सूची दी है।

❑ **इस लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता :**

1. ''पहला गिरमिटिया' तथा 'महानायक' का विचार पक्ष : तुलनात्मक अध्ययन'' को केंद्रबिंदु बनाकर इस लघु शोध-प्रबंध में स्वतंत्र रूप से प्रथमत: ही अनुसंधान संपन्न हुआ है।
2. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में गिरिराज किशोर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा विश्वास पाटील का व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समग्र लेखा-जोखा वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है।
3. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में विचारों के अलग-अलग भेदों का सूक्ष्मता से अध्ययन के विवेच्य उपन्यास में चित्रित विचारों का बारिकी से अध्ययन किया गया है।

ऋणनिर्देश :

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले हितैषियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना आद्य कर्तव्य समझता हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध श्रद्धेय गुरुवर्य **डॉ. अर्जुन चव्हाण जी**, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय के कुशल निर्देशन का फल है। आपने अनेक व्यस्तताओं के होते हुए मेरी अनुसंधान की त्रुटियों को दूर कर तत्परता और आत्मीयता के साथ मौलिक और सही दिशा में मार्गदर्शन किया है। आपके मौलिक विचारों से मैं हमेशा लाभान्वित हुआ हूँ। आपका आदर्श, प्रसन्न एवं प्रभावी व्यक्तिमत्व मुझे हमेशा प्रेरित करता रहा है। मैं आपके तथा आपके परिवार के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और कामना करता हूँ कि भविष्य में भी आपके आशीर्वचन और मार्गदर्शन प्राप्त हो।

मराठी साहित्यकार **विश्वास पाटील** इनका भी सदैव आभारी रहूँगा। आपने अपनी व्यस्तता से वक्त निकालकर जो सहयोग दिया है, उससे मुझे मेरे अनुसंधान कार्य में मौलिकता लाने में मदद हुई है। अत: मैं आपका सदैव ऋणी रहूँगा। मेरे लिए अपार कष्ट उठानेवाले **मेरे माता-पिता** के ऋण शब्दों में अभिव्यक्त कर मैं उनके ऋण से मुक्त नहीं हो सकता। जीवन में सही राह दिखानेवाले, आजीवन आगे बढ़ने की प्रेरणा देनेवाले मेरे आदरणीय एवं पूजनीय माता-पिता के आशीर्वाद के कारण ही मैं यहाँ तक पढ़ सका हूँ। उनका स्नेह और आशीर्वाद सदैव मेरे साथ बना रहे यही ईश्वर से कामना करता हूँ। साथ ही मेरे **चाचा-चाची** तथा **भैया-भाभी** का आशीर्वाद और प्रेरणा सदैव मेरे साथ ही रही है, अत: मैं उनका भी आजीवन ऋणी रहूँगा।

आदरणीय **डॉ. सुनील कुमार लवटे, डॉ. रवींद्र ठाकुर, डॉ. यादवराव धुमाळ, डॉ. शोभा निंबालकर, डॉ. आशा मणियार, प्रा. शहाजहान मणेर (भैया), डॉ. संजय नवले, डॉ. सुलोचना आंतरेड्डी, प्रा. उमराव बोंदर, डॉ. गोरख कीर्दत** आदि का स्नेह मेरे साथ रहा। अत: मैं इनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ। **डॉ. भाऊसाहेब नवले** का मुझे एम्.ए. से लेकर अब तक सदैव मार्गदर्शन मिला अत: मैं उनका सदैव आभारी रहूँगा। मेरे शुभाकांक्षी और मेरे मित्र **मारूती तुपेरे, इंद्रजित वीर, पुरुषोत्तम वाघुलकर, अशोक मरळे, किरण देशमुख, दीपक तुपे, प्रकाश मुंज, दत्तात्रय पवार (डी.के.), सुधीर लेंडवे, अजित खळतकर, बाळासाहेब कदम, तानाजी हावलदार** तथा एम्.फिल्. की सहेलियाँ में **कु. रूपाली चव्हाण, कु. रीना पाटील, कु. वैशाली कुंभार** का भी इस लघु शोध-प्रबंध कार्य की पूर्ति के लिए सहयोग प्राप्त हुआ। अत: इन सभी के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति मुझे **बैरिस्टर बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापुर** तथा **महावीर कॉलेज, कोल्हापुर** से हुई। अत: इन ग्रंथालयों के सभी कर्मचारियों का और हिंदी विभाग के **डॉ. मंगेश कोळेकर** और **चांदणे मामा** का सहयोग भी महत्त्वपूर्ण रहा है। अत: मैं इन सब का ऋणी हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंधक को आकर्षक एवं यथोचित रूप में टंकन करनेवाले **अक्षर टायपिंग** के संचालक **श्री. गिरिधर सावंत और सौ. पल्लवी सावंत** का भी मैं आभारी हूँ। साथ ही जिन ज्ञात-अज्ञातों की शुभकामनाएँ मुझे प्राप्त हुई हैं उन सब के प्रति आभार प्रकट करते हुए मैं इस लघु शोध-प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध-छात्र

(श्री. वालचंद उमराव नागरगोजे)

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 5 FEB 2007

* * * *